नववर्ष प्रवेश पर मंगल सन्देश

समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है। सन् २००९ का वर्ष बीत गया और सन् २०१० का सूर्य अपनी अरुणिमा के साथ उदित हो रहा है। सन् २००९ में क्या-क्या हुआ? इसका उल्लेख करना मैं आवश्यक नहीं मानता। प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया उसका विवरण प्रस्तुत करती रही है। वह हर पाठक के सामने है। आर्थिक मंदी, आतंकवाद और उग्रवाद जैसी समस्याएं विश्व के सामने आईं। विश्व का संचालन करने वाले तंत्र उसका समाधान भी खोजते रहे। मैं उन समस्याओं की विस्तार से चर्चा करना नहीं चाहता। मैं उस समस्या की चर्चा करना चाहता हूं, जो मानव के मूलभूत अधिकारों की अनदेखी कर रही है।

गरीबी, बेरोजगारी और भुखमरी ये तीन समस्याएं मानवता का उपहास कर रही हैं। इनके अनेक कारण हो सकते हैं, पर मेरी दृष्टि में इन समस्याओं का मूल कारण है करुणा और संवेदनशीलता का अभाव। विश्व में बड़े-बड़े उद्योग, बड़े-बड़े अरबपति-खरबपति लोग विद्यमान हैं। बड़े-बड़े राज्यतंत्र को चलाने वाले लोग सत्ता की कुर्सी पर बैठे हैं। यदि उन सबमें करुणा और संवेदनशीलता की चेतना जागृत हो और मानवता का कोई अर्थ हो तो कम से कम भुखमरी की समस्या तो नहीं रह सकती। करुणा की चेतना के अभाव में ही यह हो रहा है कि बड़े-बड़े लोग सब कुछ खा रहे हैं और करोड़ों-करोड़ों बच्चों को दो जून खाने को नहीं मिलता। वे भूखे पेट सोते हैं। करुणा का विकास हो तो ऐसा हो नहीं सकता। पीने के पानी के स्रोत सूख रहे हैं, यह गंभीर समस्या है, किन्तु इससे भी गंभीर समस्या है करुणा का स्रोत सूख रहा है।

नए वर्ष के नए प्रभात के अवसर पर मैं सभी समर्थ लोगों से यहां तक कि सभी धर्मगुरुओं के सामने यह चिन्तन रखना चाहता हूं कि हम सब दुनिया का सबसे बड़ा कारखाना खोलें। वह कारखाना होगा करुणा का कारखाना। यदि हम इस मानवीय समस्या पर गंभीर हों और गंभीर चिन्तन करें तो मुझे नहीं लगता कि इसका समाधान असंभव है।

मैं न तो किसी पर आरोप करना चाहता हूं और न किसी को दोषी ठहराना चाहता हूं, किन्तु सबके सामने मानवीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहता हूं और यह चाहता हूं कि हम सब नए वर्ष के सूर्य को करुणा का अर्घ्य चढ़ाकर विश्व शान्ति का संकल्प करें।

श्रीडूंगरगढ़ (राजस्थान) **आचार्य महाप्रज्ञ**